देश में उगायी जाने वाली मुख्य फसलें

100. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या वर्ष 1992-93 के दौरान देश में कौन-कौन सी फसलें सफलतापूर्ण उगायी गई तथा किन-किन फसलों में देश आत्मनिर्भर है;

(ख) पिछले तीन वर्षों के दौरान देश में कृषि के क्षेत्र में किए गए अनुसंधान कार्यों का ब्यौरा क्या है और उनका लाभ किसानों ने किस रूप में उठाया; और

(ग) पिछले तीन वर्षों के दौरान धान और गेहूं की कितनी नई किस्में विकसित की गई और उनकी पैदावार को बढ़ाने के लिए सरकार ने क्या उपाय किए हैं ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) 1992-93 के दौरान देश में सफलतापूर्वक उगाई गई मुख्य फसलें थीं—गेहूं, चावल, मोटे अनाज, दालें, कपास, पटसन और मेस्ता आदि। देश ने कुछ दालों को छोड़ कर सभी प्रमुख फसलों में व्यावहारिक तौर पर आत्म-निर्भरता प्राप्त कर ली है।

(ख) गत तीन वर्षों के दौरान देश में कृषि के क्षेत्र में किए गए अनुसंधान कार्य के ब्यौरे दर्शाने वाला एक विवरण-पत्र संलग्न है, (नीचे देखिए)। राज्य कृषि विभाग, राज्य/केन्द्र द्वारा प्रायोजित विभिन्न परियोजनाओं के जरिए किसानों द्वारा नवीन प्रौद्योगिकियों के अंगीकरण को बढ़ावा देने के लिए सतत् प्रयास कर रहे हैं।

(ग) गत तीन वर्षों में चावल की लगभग 10 नई किस्में और गेहूं की लगभग 13 नई किस्में विकसित की गई हैं। भारत सरकार, चावल और गेहूं की उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाने के लिए अभिज्ञात राज्यों में समेकित चावल विकास कार्यक्रम तथा गेहूं के लिए विशेष खाद्यान्न उत्पादन कार्यक्रम क्रियान्वित कर रही है।

विवरण

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों और विस्तार एजेन्सियों के माध्यम से जिन्सों के समग्र कृषि उत्पादन व सतत् उत्पादन लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर उन्मुख अनुसंधान तथा विकास सहायता प्रदान करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् प्रयास करता रहा है। अनुसंधान तंत्र में 47 केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, 22 राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र और 9 परियोजना निदेशालय, दोनों केन्द्रीय अनुसंधान संस्थानों की भागीदारी सहित 70 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएं और 27 राज्य कृषि विश्वविद्यालय शामिल हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् विस्तार/राज्य कार्मिकों को उन्नत प्रौद्योगिकी का अन्तरण करने के लिए इनको व्यापक रूप में अपना लिए जाने से पहले मुख्य प्रदर्शन आयोजित करने की जिम्मेवारी का भी वहन करता है। राष्ट्रीय प्रदर्शन संक्रियात्मक अनुसंधान परियोजना, प्रयोगशाला से खेत तक, कृषि विज्ञान केन्द्र जैसी विशेष परियोजनाओं से इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।

कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य हुए हैं। पिछले तीन वर्षों के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के मामले में मुख्य उपलब्धियां इस प्रकार हैं :

(1) विभिन्न फसलों की अधिक पैदावार देने वाली किस्में/संकर किस्में जारी करना, जिसमें मोटे अनाजों की 192, तिलहनों की 74, दालों की 21, वाणिज्यिक फसलों की 30 और चारा फसलों की 16 किस्में जारी की गई/की पहचान की गई।

(2) वैज्ञानिक भाषा में यह कहा जा सकता है कि पूर्वी भारत को "कठिन पारिस्थितिकीय प्रणाली" के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जहां आधारभूत सुविधाएं अपर्याप्त हैं। प्रौद्योगिकी पैकेज के साथ-साथ तेज और बहुत तेजी से विकसित होने वाली किस्में अब अच्छी तरह से स्थापित हो चुकी हैं, जो प्रति हैक्टेयर 3-4 मीटरी टन चावल उत्पादन देती हैं। निम्न भूमि, गहरे जल

पारिस्थितिकी प्रणाली के लिए चावल की किस्में भी अब विकसित की जा चुकी हैं। पूर्वी भारत के लिए उपयुक्त मूंगफली की किस्में भी विकसित की गई हैं और उन्हें उपयोग में भी लाना शुरु कर दिया गया है। कुछ निश्चित किस्मों का विकास हो जाने की वजह से गेहूं और तोरिया सरसों की खेती की शुरुआत पूर्वी भारत में भी हो गई है।

(3) तटीय आन्ध्र प्रदेश का एक बड़ा भू-भाग धान की फसल लेने के बाद परती भूमि के तौर पर छोड़ दिया जाता था। अब एक ऐसी किस्म विकसित की गई है जो धान की फसल के चक्र के लिए अनुकूल है और चावल वाली परती भूमि में प्रयुक्त की जा सकती है। तटीय आन्ध्र प्रदेश के लिए यह एक महत्वपूर्ण सफलता है। कुछ अनुकूल किस्मों तथा प्रौद्योगिकी पैकेज के विकास से बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक बड़े भू-भाग में मक्का की खेती की जाने लगी है, जो इस क्षेत्र के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

(4) पंजाब में सूरजमुखी, अरहर गेहूं चक्र और सफल कपास गेहूं चक्र के लिए कपास की जल्दी परिपक्व होने वाली किस्मों के विकास से उत्तरी राज्यों में अप्रत्यक्ष रूप से एक फसल क्रान्ति का सूत्रपात हुआ है। मध्य भारत के मैदानों में राजमाह तथा सोयाबीन की फसलों को सफलता मिली है और इन फसलों के तहत आने वाला रकबा वर्ष प्रति वर्ष बढ़ रहा है। हरियाणा के लिए भी सोयाबीन की सर्वाधिक सफल किस्में विकसित कर ली गई हैं।

(5) रबी सोरगम, अरण्डी, पर्ल-मिलेट तथा अरहर की संकर किस्में विकसित करने में भारत विश्व में अग्रणी रहा है। चावल की संकर किस्में विकसित करने के लिए एक व्यापक योजना बनाई जा रही है। भारत ने कपास की विश्व की पहली संकर किस्म विकसित की है, जिसके परिणाम-स्वरूप कपास की बढ़िया और बहुत बढ़िया किस्मों में आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है।

(6) भारत सरकार के पेयजल प्रौद्योगिकी मिशन ने वर्षा के पानी के पेयजल के तौर पर उपयोग हेतु उसके भण्डारण और परिरक्षण के लिए उन्नत टैंक व्यापक रूप से अपनाए है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा कृषि विश्वविद्यालयों के विभिन्न अध्ययनों के माध्यम से पनधारा संसाधनों के एकीकृत प्रबंध की अवधारणा पर प्रयोग किए गए हैं और उन्हें बढावा दिया गया है। वर्षा सिंचित क्षेत्रों को पनधारा आधार पर विकसित करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा उक्त अवधारणाएं अब स्वीकार कर ली गई हैं। विनिर्दिष्ट मृदा तथ जलवायु परिस्थितियों में वर्षा सिंचित क्षेत्रों में मिश्रित फसल पद्धति सहित फसल पद्धति को बढ़ावा देकर इसकी सिफारिश की गई है। महाराष्ट्र में कम पानी देने वाले नलकूपों के क्षेत्र में ड्रिप सिंचाई प्रणाली को उन्नत बना कर इसे व्यापक रूप में अपनाया गया है।

(7) गंगा के मैदानों में क्षारीय मृदा युक्त बड़े भू-भाग में सुधार करने की प्रौद्योगिकियों को उन्नत बनाया गया है। क्षारीय मृदा को फसल उत्पादन हेतु अनुकूल बनाने के लिए इन प्रौद्योगिकियों को पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश सरकार ने व्यापक रूप से अपनाया है।

(8) अनन्नास और केले का बहुत गहन रोपण करने से तमिलनाडु, गुजरात और कर्नाटक में इसके उत्पादन पर काफी प्रभाव पड़ा है। अंगूर की उत्पादन प्रौद्योगिकी से भारत इसकी उत्पादकता में सर्वप्रथम (50 टन/है०) हो गया है जबकि महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश में इसकी अधिकतम औसत उत्पादकता 30 मीटरी टन प्रति हैक्टेयर तक पहुंच गई है। अंगूर से रेजिन प्राप्त किए जाने से इसके (रेजिन के) आयात में कमी आई है। विगत 6 वर्षों के दौरान पश्चिम बंगाल में सब्जियों का उत्पादन तिगुना हो गया है।

(9) बागवानी की 33 उन्नत कल्टीवर्स/संकर किस्मों में ये शामिल है—अच्छे गुणवत्ता वाले आम के दसहरी क्लोन, संकर आम 117, अनार की एक संकर किस्म, दो बड़ी किस्में, सब्जियों की 10 किस्में, इंडो-गंगा मैदान के लिए उपयुक्त आबु की एक संकर किस्म, आंध्र प्रदेश के लिए शंकरकंदी

का एक कल्टीवर, नारियल की एक मुलायम किस्म तथा नारियल की एक संकर किस्म, काजू के दो कल्टीवर, मसालों और सुगन्धित पौधों की 12 किस्में।

(10) एक नई और अधिक सक्षम फसल पद्धति का विकास ताकि उत्पादन की कोई हानि किए बिना सतत् आधार पर 30 प्रतिशत तक जल की बचत की जा सके।

(11) भैंस की एक ऐसी श्रेष्ठ प्रजाति का विकास जो 395 दिनों की प्रति ब्यात की अवधि में 2,790 कि० ग्राम दूध दे सकती हो।

(12) ऐसे ब्रायलर स्ट्रेन का निर्गम जो कि 6 हफ्ते में 1400 ग्राम से अधिक का हो जाता है तथा जिनकी मृत्यु-दर भी कम होती है।

(13) राष्ट्रीय स्तर पर मत्स्य तालाबों की उत्पादकता को 50 कि० ग्रा०/है०/वर्ष से बढ़ कर 1850 कि० ग्रा०/है०/वर्ष तक करने तथा जलाशयों की उत्पादकता को 20 कि० ग्राम/है०/वर्ष से बढ़ कर 220 कि० ग्राम/है०/वर्ष करने के लिए नई प्रौद्योगिकी का विकास करना।

(14) प्रति वर्ष 4,000 से अधिक प्रदर्शनों का आयोजन करना जिसमें अधिकतम कृषि जलवायुवीय क्षेत्रों को शामिल किया जा सके जिसमें चावल, गेहूं, दलहन और तिलहन फसलों की पैदावार को पड़ौसी किसानों की पैदावार से दुगुना अथवा तिगुना करने संबंधी प्रदर्शनों का आयोजन करना शामिल है।

(15) खास-तौर से वर्षा सिंचित खेती वाले क्षेत्रों में "प्रयोगशाला से खेतों तक" कार्यक्रम के अन्तर्गत 20,000 कृषक परिवारों को लाना और उत्पादकता में 40 प्रतिशत की वृद्धि करने के लिए प्रदर्शन करना।

(16) कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 9516 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना ताकि 2,07,446 प्रशिक्षणार्थियों तथा 1445 प्रशिक्षकों को लाभान्वित किया जा सके।

(17) 26,5000 से अधिक अनुसूचित जाति/जनजाति कृषक परिवारों ने सामाजिक आर्थिक उन्नयन के लिए बनाई गई परियोजनाओं के माध्यम से अपनी वार्षिक आय को 1000 रुपए से बढ़ा कर 3000 रुपए कर लिया।

(18) देश के 180 जिलों में 183 कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गई।

(19) आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान देश के 7 उत्तर-पूर्वी राज्यों को लाभान्वित करने के लिए इम्फाल में केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

(20) आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान वर्ष 1992-93 तथा 1993-94 में दो नए राष्ट्रीय संस्थान (दलहन अनुसंधान तथा पशु-पोषण), मुख्य रूप से बागवानी फसलों (शुष्क बागवानी क्षेत्रों, केला, प्याज तथा लहसुन), आर्किड, चिकित्सीय तथा सुगन्धित पौधे, अंगूर, आयल पाम, रेपसीड तथा सरसों, कृषि में महिलाएं में नौ नए राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, जैविक नियंत्रण के लिए एक नया परियोजना निदेशालय, 6 नए ए० आई० आर० सी० पी० (चिकपी, अरहर, मिल्लार्य, मूंगफली तथा रेपसीड, सरसों, मानव अभियांत्रिकी तथा कृषि में सुरक्षा अध्ययन) तथा तीन नए नेटवर्क (सूक्ष्म पोषक तत्व, पशु अनुवांशिकी संसाधन, फसल अवधारित पशु प्रजनन प्रणाली) प्रारम्भ किए गए हैं।

Functioning of the Livestock firm at Bhubneswar

101. SHRI VIREN J. SHAH :
SHRI PRAMOD MAHAJAN :

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to a report published in the Independent (Bombay) of October 19, 1993 under the caption, "Government apathy claim Asia's largest livestock firm";

(b) if so, what are the details in this regard;